JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

केसरी सिंह बारहठ के शिक्षा दर्शन की वर्तमान में प्रासंगिकता

डॉ. अरविन्द आशिया
शोध निदेशक
पूर्व प्राचार्य
विद्याभवन गोविन्दराम सेकसरिया
शिक्षक महाविद्यालय, सीटीई, उदयपुर

सुमन शर्मा
शोधार्थी
मोहनलाल सुखाड़िया
विश्वविद्यालय, उदयपुर

शोध सार –

शिक्षा का विचारात्मक पहलू दर्शन है। अनेकों शिक्षाशास्त्रियों ने बदलते सामाजिक परिदृश्य के अनुरूप अपने शैक्षिक विचार प्रस्तुत किये है। केसरी सिंह बारहठ द्वारा ब्रिटिशकालीन समाज में व्याप्त अंग्रेजी शिक्षा के दुष्प्रभाव, कुरीतियों व अज्ञानता को दूर करने हेतु विभिन्न शिक्षा योजनाएँ व शिक्षा सुधार हेतु विचार प्रस्तावित किए गये। उनके विचार वर्तमान शैक्षिक समस्याओं के परिप्रेक्ष्य में भी उतने ही प्रासंगिक प्रतीत होते है जितने प्रस्तुत किये जाने के समय थे।

प्रस्तावना –

शिक्षा अत्यंत व्यापक शब्द है जो बालक के सर्वांगीण विकास को इंगित करता है। शिक्षा के माध्यम से मनुष्य अपनी अन्तर्निहित शक्तियों से परिचित हो पाता है। शिक्षा का वैचारिक पक्ष दर्शन है। शिक्षा एवं दर्शन परस्पर विलग नहीं हैं एक ही विचारधारा के दो बिन्दू है। शिक्षा भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का आधार है। प्राचीनकाल से आधुनिककाल तक शिक्षा प्रणाली में अनेकानेक परिवर्तन हुए इस कारण हम अपनी प्राचीन समृद्ध शिक्षा प्रणाली में से विमुख हो गए। समय–समय पर विभिन्न विद्वानों, विचारकों, दर्शनशास्त्रियों व शिक्षाविद्ों ने अपने शैक्षिक विचारों के माध्यम से हमें अपनी प्राचीन परम्परागत शिक्षा व्यवस्था से जोड़ने का प्रयास किया। ठा. केसरी सिंह बारहठ इसी वैचारिक श्रृंखला की एक कड़ी हैं जिन्होंने देश, काल, परिस्थिती के अनुरूप शैक्षिक सुधारों हेतु अपने विचारों का प्रतिपादन किया।

समस्या कथन – केसरी सिंह बारहठ के शिक्षा दर्शन की वर्तमान में प्रासंगिकता **उद्देश्य** –

- केसरी सिंह बारहठ के शिक्षा दर्शन का अध्ययन।
- केसरी सिंह बारहठ के शिक्षा दर्शन की वर्तमान में प्रासंगिकता का अध्ययन।

मुख्य शब्दावली – सेवावृत्ति, तकनीकी, स्वावलम्बी, आत्मानुभूति

शोध विधि – ऐतिहासिक अनुसंधान विधि

स्रोत –

- **प्राथमिक स्रोत** – केसरी सिंह बारहठ द्वारा रचित साहित्य, लेख, पत्र, काव्य आदि
- **द्वितीयक स्रोत** – केसरी सिंह बारहठ से सम्बन्धित पुस्तकें, शोधपत्र, लेख आदि

ठा. केसरी सिंह का जीवन परिचय –

ठा. केसरी सिंह बारहठ राजपूताने के प्रमुख कवि, समाजसुधारक, क्रांतिकारी व शिक्षाविद् थे। उनका जन्म 21 नवम्बर 1872 को उनकी पैतृक जागीर शाहपुरा के देवखेड़ा गाँव में हुआ था। इनके पिता ठा. कृष्ण सिंह बारहठ तत्कालीन राजपूताने के सम्मानित राजनीतिज्ञ, इतिहासकारों में एक थे। केसरी सिंह बारहठ की शिक्षा दीक्षा उदयपुर की चारण पाठशाला में प. गोपीनाथ शास्त्री के सानिध्य में हुई। इन्होंने हिन्दी, प्राकृत, पाली, मराठी, गुजराती, बांगला और डिंगल भाषा के साथ साहित्य, दर्शन, इतिहास, राजनीति आदि विषयों का भी गहन अध्ययन किया। केसरी सिंह बारहठ के समय ब्रिटिश सरकार अंग्रेजी शिक्षा के माध्यम से राजपूताने के शासकों, सामन्तों व देशी प्रजा में ब्रिटिश ताज के प्रति निष्ठा व दासता का भाव पोषित करने का प्रयास कर रही थी। बारहठ जी के शिक्षा दर्शन का उद्देश्य आत्मगौरव व स्वाभिमान से युक्त नागरिक तैयार करना था जो देश की स्वतन्त्रता एवं विकास हेतु उपयोगी व उद्योगी प्रजा बन सकें। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु उन्होंने शिक्षा के प्रचार–प्रसार व सुधार हेतु अनेक योजनाएँ प्रस्तावित की।

ठा. केसरी सिंह बारहठ का शिक्षा दर्शन –

केसरी सिंह बारहठ के शैक्षिक विचार हमें उनके द्वारा लिखे गये पत्रों, लेखों व शिक्षा प्रसार व सुधार योजनाओं के प्रारूप से प्राप्त होते है। वे आदर्शवादी के साथ यथार्थवादी विचारक भी थे। उन्होंने उपदेशात्मक बात न कहकर उसे आचरण में उतारा और उदाहरण प्रस्तुत किया। उनका शिक्षा दर्शन तत्कालीन समाज को कुरीतियों और अज्ञानता के अन्धकार से निकालने का मार्ग था। वे समाज को ब्रिटिश दासता के खिलाफ स्वावलम्बी व स्वाभीमानी बनाना चाहते थे और इसका एक मात्र माध्यम शिक्षा को मानते थे। अतः उन्होंने समय –समय पर शिक्षा के सन्दर्भ में अपने विचार प्रस्तुत किये।

केसरी सिंह बारहठ के अनुसार –

शिक्षा का अर्थ –

बारहठ जी के अनुसार शिक्षा व्यक्ति के सच्चे नेत्र है। विद्याविहीन व्यक्ति चर्म चक्षू रखता हुआ भी नेत्रहीन हैं शिक्षित व्यक्ति ही अपने हानी–लाभ व शुभ–अशुभ को देख उस पर विचार कर सकता हैं शिक्षा का वास्तविक अर्थ आत्मानुभूति है। व्यक्ति स्वयं को तभी जान सकता है जब वह अपने परिवेश, समाज, मातृभूमि, राष्ट्र को जान सके। केसरी सिंह जी ने सदैव व्यवहारिक शिक्षा पर बल दिया जो देश व जाति हित में उपयोगी हो।

शिक्षा का उद्देश्य –

केसरी सिंह बारहठ के अनुसार शिक्षा मात्र जीविकोपार्जन या सेवावृत्ति के योग्य बनाने के लिए नही वरन् देशभक्त, सच्ची और स्वतन्त्र उद्योगी प्रजा बनाने के लिए होनी चाहिए। शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को श्रमशील व स्वावलम्बी बनाना होना चाहिए। शिक्षा बालक में निहित सभी गुणों के प्रस्फूटन के लिए दी जानी चाहिए।

पाठ्यक्रम का स्वरूप –

पाठ्यक्रम शिक्षा के उद्देश्यों की पूर्ति का माध्यम है। अतः पाठ्यक्रम में वे सभी तत्व समाहित होने चाहिए जो व्यक्ति, समाज व देश की आवश्यकताओं को पूरा करें। केसरी सिंह बारहठ के अनुसार समय व परिस्थिति के अनुसार पाठ्यक्रम का स्वरूप बदलता रहना चाहिए। वे पाठ्यक्रम में राज्य धर्म, प्रजा धर्म, कृषि, शिल्प, वाणिज्य आदि विषयों को शामिल करने का सुझाव देते है।

शिक्षक –

बारहठ जी लिखते है कि शिक्षक उच्च शिक्षा प्राप्त होने चाहिए व उनके लिए स्थायी कर्त्तव्य भी निश्चित किये जाने चाहिए। वे शिक्षक में अनुशासन, चरित्रवान, निष्ठावान, शिक्षा के प्रति समर्पित आदि गुणों का उल्लेख करते है।

विद्यालय –

केसरी सिंह बारहठ भय मुक्त विद्यालयी वातावरण के पक्षधर थे। उनके अनुसार अत्यधिक कठोर अनुशासन में बालक की मूल प्रवृत्तियाँ विकसित नहीं हो पाती है। अतः उन्मुक्त, स्वतन्त्र विद्यालयी वातावरण की संकल्पना प्रस्तुत करते है जिससे बालक में निडरता, स्वाभिमान व देशप्रेम के गुण विकसित हो सकें।

स्त्री शिक्षा –

केसरी सिंह बारहठ कहते है कि मेरे लिए पुत्र–पुत्री में भेद नहीं है। उन्होंने अपने परिवार में पुत्रियों व पौत्रियों की शिक्षा–दीक्षा का प्रबन्ध घर पर ही किया। वे स्त्री शिक्षा को अनिवार्य मानते थे व महिला सशक्तिकरण के पोषक थे। उनके सस्नेह अनुशासित परिवेश में

पोषित उनके परिवार की महिलाएँ विदुषी, प्रखर बुद्धिमती, साहसी, निडर व सत्यवादी जैसे गुणों से परिपूर्ण थी। उन्होंने देश, जाति व समाज के हित में महिलाओं के योगदान को महत्वपूर्ण समझा और इस दिशा में निरन्तर प्रयास किये।

मूल्य शिक्षा –

बारहठ जी अपने पत्रों के माध्यम से मूल्य शिक्षा की बात करते है। उनके पत्रों में संतोष, क्षमा, उदारता, एकता, सेवाधर्म, दया, धैर्य, करूणा, मुदिता जैसे मूल्य उल्लेखित है। उनके मूल्य शिक्षा के सन्दर्भ में विचार वर्तमान समाज की समस्याओं का प्रत्यक्ष समाधान है। यदि केसरी सिंह के समान सभी पिता अपनी सन्तान को इस प्रकार के मूल्यों से पोषित करें तो समाज में समस्याएँ ही उत्पन्न ना हो।

तकनीकी शिक्षा –

शिक्षा के सम्बन्ध में केसरी सिंह बारहठ के विचार उनके समय से आगे थे। उन्होंने तकनीकी शिक्षा हेतु विद्यार्थियों को जापान भेजने की योजना बनाई। उनके अनुसार जापान तकनीकी की दृष्टि से समृद्ध देश है। वहाँ शिक्षा प्राप्त कर नवयुवक देश की वैज्ञानिक प्रगति में सहयोगी होंगे। अतः उन्होंने 1908 ई. में राजपूताना एण्ड सैन्ट्रल इंडिया एज्युकेशनल ऐसोसियेशन फॉर टेक्नीकल एज्युकेशन की रूपरेखा तैयार की।

केसरी सिंह बारहठ के शिक्षा दर्शन की वर्तमान में प्रासंगिकता –

केसरी सिंह बारहठ ने अपने समयानुसार देश व समाज के हित में शिक्षा सुधार हेतु अपने विचार प्रस्तुत किये। आज एक शताब्दी से अधिक समय के पश्चात् भी वे विचार अत्यन्त प्रासंगिक प्रतीत होते हैं। उनके शिक्षा दर्शन का गहन विश्लेषण के पश्चात् यह अनुभव होता है कि वर्तमान समय में भी इस प्रकार के शिक्षा सुधारों की आवश्यकता है। वर्तमान समय में शिक्षा अपने मूल उद्देश्यों से भटक कर मात्र उपाधि प्राप्त करने तक रह गई है। मूल्य विहिन शिक्षा युवाओं में तनाव, कुंठा, आक्रोश जैसी समस्याएँ उत्पन्न कर रही है। अतः वर्तमान शैक्षिक समस्याओं के सन्दर्भ में केसरी सिंह बारहठ के विचार अत्यन्त महत्वपूर्ण व उपयोगी है। इनका शिक्षा दर्शन वर्तमान शिक्षा के दोषों का निवारण करके आदर्श शिक्षा प्रणाली के स्वरूप को विकसित करने में सार्थक सिद्ध हो सकता है। यदि केसरी सिंह बारहठ के प्रगतिशील व नवाचारी शिक्षा दर्शन को आदर्श मानकर शिक्षा क्षेत्र में प्रयोग किया जाए तो अनेक समस्याओं का स्वतः समाधान प्राप्त किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

- मानव फतह सिंह – भारतीय साहित्य के निर्माता केसरी सिंह बारहठ साहित्य अकादमी 2016

- पालीवाल देवीलाल, जावलिया डॉ. ब्रजमोहन एवं अन्य – क्रांतिकारी बारहठ केसरी सिंह व्यक्तित्व एवं कृतित्व, प्रथम खण्ड, 1984 राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर
- पालीवाल देवीलाल, जावलिया डॉ. ब्रजमोहन एवं अन्य – क्रांतिकारी बारहठ केसरी सिंह व्यक्तित्व एवं कृतित्व, द्वितीय खण्ड, 1986 राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर
- धमोरा सवाई सिंह (सम्पादक) : पुण्य स्मरण – राजस्थान केसरी ठाकुर केसरी सिंह बारहठ
- साधना राजलक्ष्मी देवी – क्रान्तिकारी जोरावर सिंह बारहठ कुछ स्मृतियाँ, 2017
- गुप्ता डॉ. मोहनलाल – क्रांतिकारी बारहठ केसरी सिंह, राजस्थानी ग्रन्थागार जोधपुर 2020
- चारण डॉ. गजादान (सम्पादक) – क्रांतिकारी बारहठ परिवार, गौरव ग्रंथ साहस, संघर्ष एवं बलिदान की अनुपम गाथा, अमर शहीर कुँवर प्रताप सिंह बारहठ सेवा संस्थान शाहपुरा (भीलवाड़ा) 2020
- पाण्डेय रामशकल – शिक्षा के दर्शन एवं समाजशास्त्रीय पृष्ठभूमि अग्रवाल पब्लिकेशन्स 1986